फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने–बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान–प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 240 1/– जून 2008

टेढापन
टेढेपन को बढाता है।
टेढेपन का उपचार
सीधापन है।

चक्रव्यूह मरने-मारने का

●स्वयं को दोष देना। अपने को खुद काटना। व्यक्ति का प्रतिदिन कई-कई बार मरना।
●आस-पास वालों को दोष देना। ईर्द-गिर्द वालों की टाँग खींचना। मनमुटाव और चुगली का बोलबाला।
●इस-उस समूह को दोषी ठहराना। समूहों का एक-दूसरे के विरुद्ध लामबन्द होना। अनेकानेक प्रकार के गिरोहों में टकरावों का बढ़ते जाना।

उपरोक्त को विश्व में वर्तमान की एक झलक कह सकते हैं। मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता समवेत स्वर धारण कर रही है।

क्या है मौलिक परिवर्तन? कई पीढियों से हम इस प्रश्न से जूझ रहे हैं। अनगिनत प्रयास किये जा चुके हैं, अनेक कोशिशें जारी हैं। मन्थन, सामाजिक मन्थन आज विश्व-व्यापी है। इस मन्थन में एक योगदान के लिये यहाँ यह चर्चा आरम्भ कर रहे हैं।

प्रकृति जटिल है। प्रकृति की अनबूझ पहेलियों ने हमारे आदिम पुरखों में अनेक देवी-देवता स्थापित किये थे। आदिम समुदायों की टूटन, मानवों में स्वामी और दास की उत्पत्ति ने प्रकृति से भी जटिल सामाजिक तानों-बानों की रचना आरम्भ की। पाँच-सात हजार वर्ष पहले शुरू हुई जटिलता आज ऐसी भूलभुलैया बन गई है कि हम में से कोई भी, कभी भी, कहीं भी खो सकती-सकता है।

कहाँ-कहाँ से बार-बार गुजरे, नये सन्दर्भों में गुजरे-गुजर रहे हैं : जीवन शाप-संसार मिथ्या-सन्यास, मरण का वरण-जन्म से मुक्ति, मोक्ष-स्वर्ग, जन्नत, बैकुंठ-.... विद्रोह, विप्लव, क्रान्तियाँ।

और, बद से बदतर होते हालात ने कुछ भी पवित्र नहीं छोड़ा है। जिन्हें समाधान सोचा था उन्हें समस्या पाया। नये समाधान और विकट समस्या निकले तो पुराने "समाधान" में लौटने की ललक........ सब सद्इच्छाओं के बावजूद पन्थ, गुट, गिरोह मरने-मारने के चक्रव्यूहों की रचना करते, उन्हें पुष्ट करते लगते हैं।

ऐसे में इस-उस व्यक्ति अथवा यह-वह समूह की बजाय उस सामाजिक प्रक्रिया को केन्द्र में रख कर पड़ताल करना उचित लगता है जो हमें वर्तमान तक लाई है।

सब कुछ को फतह करने के फेर में सर्वस्व के विनाश की ओर अग्रसर इस सामाजिक प्रक्रिया का एक पहलू तेजी है। आइये तीव्र से तीव्रतर गति को थोड़ा कुरेद कर देखें।

रफ्तार की महिमामंडन के किस्से पुराने हैं। घोड़ों के बाद रेल भी अब पुरानी हो गई है। और, अन्तरिक्ष में ले जाने के लिये आवश्यक बाहरी गति से भी अधिक हमारे अन्दर की गति, हमारी आन्तरिक रफ्तार वर्तमान की प्रतीक है।

प्रश्न हैं : एक से दूसरे स्थान की दूरी कम समय में तय करना क्या हमारे जीवन को बेहतर बनाना है? मन और मस्तिष्क की तीव्रता क्या जीवन्तता बढाती है? और इन से जुड़े सवाल हैं : गति का उत्पादन कैसे होता है? रफ्तार पैदा करने की कीमत क्या है?

सोचने-विचारने-मनन करने की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में कुछ बातें यह हैं। बढती रफ्तार ने आज दुनियाँ मुट्ठी में ला दी है पर अगल-बगल के लोगों के बीच चौड़ी अथाह खाईयाँ बढ रही हैं। संसार-भर में जितने युद्ध हुये हैं उन सब में मारे गये लोगों की कुल सँख्या को सड़कों पर टक्करों में मरने वालों की तादाद चुनौती दे रही है। सड़कों की चपेट में मरने वालों की सँख्या हर वर्ष बढ रही है – वाहनों की बढती रफ्तार से भी तीव्र गति से मृतकों के आँकड़े बढ रहे हैं। कार्यस्थलों पर तीव्र से तीव्रतर गति जो अंग-भंग और हत्यायें कर रही है उनके वास्तविक आँकड़े कम्पनियों तथा सरकारों की अति गोपनीय फाइलों में भी शायद ही हों। आज गति ने तन को अत्याधिक असुरक्षित बना दिया है। मन और मस्तिष्क की स्थिति तो और भी शोचनीय बन गई है। बढती रफ्तार की जरूरतें बचपन ही नहीं बल्कि शैशव काल को भी लील रही हैं। तीव्र से तीव्रतर होती गति वृद्धावस्था को बढाने के संग-संग युवावस्था में ही नाकारा बना रही है। तेज रफ्तार द्वारा अनिवार्य किया इन्द्रियों पर नियन्त्रण बढाना कसता शिकंजा है, यह हमें किसी मुक्ति-मोक्ष में नहीं ले जा रहा। भोग के जरिये सन्तुलन बनाये रखने की सीमाओं से पार जा चुकी गति योग का सहारा ले कर चक्रव्यूह को और घातक बना रही है।

इस सिलसिले में गति का उत्पादन और भी विचारणीय है। बाहरी रफ्तार को पैदा करना पृथ्वी पर व्यापक फेर-बदल लिये है। इस प्रक्रिया में अनेक जीव यौनियाँ नष्ट हो गई हैं, कई मिटने के कगार पर हैं और रोज कुछ जीव यौनियाँ खत्म हो रही हैं। पृथ्वी पर अनेक रूपों-मिश्रणों में पदार्थ फैले हैं। इन्हें अशुद्ध करार दे कर इन से स्टील, ताम्बा, अल्युमिनियम, सीमेन्ट, यूरेनियम, पैट्रोल बनाने का ताण्डव शहरों के साथ जुगलबन्दी में जो गुल खिला रहा है वे अपने आप में असहय हैं। और, गति जो गत अन्तरिक्ष की कर रही है उस पर गति के सारथी ज्ञानी-विज्ञानी भी दबी जुबान में चिन्ता जाहिर करने लगे हैं। रही मन की बात तो अनिश्चितता और असुरक्षा बढाती तीव्र गति आज हर व्यक्ति को असहाय बनाने के संग-संग बम में भी बदल रही है।

बढती सँख्या को फालतू बना कर कूड़े के ढेर में बदलती तीव्र गति .... तेज रफ्तार जुटे हुओं के लिये "अपना समय" नहीं बढा रही। "वक्त ही नहीं कट रहा" के संग-संग "किसी के पास समय नहीं है" आम बात बन गई है।

कितनी गति, कैसी रफ्तार पर विचार करना बनता है। (जारी)

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :
★अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है। ★ महीने में एक बार छापते हैं, 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद – 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

चेरा इन्डस्ट्रीज मजदूर : "24 ए इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1700-1800 और कारीगरों की 3000-4500 रुपये। रविवार को भी काम – महीने में 100 घण्टे से अधिक ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

सुरभि इंजिनियर्स श्रमिक : "318 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1800-2000 और ऑपरेटरों की 3000 रुपये। **मारुति सुजुकी** कार के पुर्जे बनाते मजदूरों के पावर प्रेसों पर हाथ कटने पर उपचार के लिये ई.एस.आई. भेज देते हैं और फिर नौकरी से निकाल देते हैं। एक शिफ्ट 12 घण्टे की और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम।"

नेशनल इंजिनियरिंग कामगार : "101 सैक्टर-6 में **नेशनल, ईस्टर्न, जय गणेश** नाम से **ओरियन्ट** पँखों के पुर्जे बनाते हैं। नेशनल और ईस्टर्न में शिफ्ट 10 घण्टे की तथा जय गणेश में 8 घण्टे की। ई.एस.आई. ईस्टर्न वाले मजदूरों की ही – जय गणेश का पता दिल्ली का है और कोई जाँच आने पर उस दिन छुट्टी कर देते हैं। हैल्परों की तनखा 2200-2400 और कारीगरों की 3000-3200 रुपये। ओवर टाइम सिंगल रेट से। पीने का पानी मजदूरों को बाहर से लाना पड़ता है।"

कैनन इण्डिया वरकर : "79 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में काम करते 650 मजदूरों में 200 की ही ई.एस. व आई.पी.एफ. हैं। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 3250 रुपये और जाँच के समय फैक्ट्री से बाहर कर देते हैं। मोल्डिंग विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और बाकी में 12 घण्टे की एक शिफ्ट। ऑपरेटरों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

इम्पीरियल ऑटो मजदूर : "ओल्ड रेलवे स्टेशन माल गोदाम के सामने स्थित फैक्ट्री में 800 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे मात्र 8 रुपये प्रतिघण्टा।"

विभा श्रमिक : "12 गुरुकुल स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2600-2700 रुपये। ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। एक शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से। साहब गाली देते हैं।"

सेक्युरिटी गार्ड : "सैक्टर-11 में कार्यालय वाली सत्यम सेक्युरिटी गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम लेती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। रोज 12 घण्टे पर तीस दिन के 2500-3500 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

दुर्गा गियर, विरमानी मेकेनिकल कामगार: "सी-8 नेहरु ग्राउण्ड स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2400-3000 रुपये। सुबह 8½ से रात 8½ की शिफ्ट है और अगले दिन की सुबह 8 तक रोक लेते हैं। महीने में 120-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।"

डी एस बुहिन मजदूर : "58 बी इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और कोई छुट्टी नहीं। ओवर टाइम सिंगल रेट से और उस में भी हर महीने 200-300 रुपये की गड़बड़ी। हैल्परों की तनखा 2200-2300 और ऑपरेटरों की 2500-3000 रुपये। दो सौ मजदूरों में 25 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। श्रम निरीक्षक 7 मई को फैक्ट्री आया था और ई.एस. आई. व पी.एफ. वाले 25 मजदूरों को 3535 रुपये तनखा दिला कर चला गया।"

एक्युटेक ऑटो श्रमिक : "233 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में अप्रैल में 200-300 रुपये बढाने के बाद हैल्परों की तनखा 2700 और सी एन सी ऑपरेटरों की 3300-3800 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टॉइम सिंगल रेट से।"

कोबे सस्पैन्शन कामगार : "15 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की एक शिफ्ट है। रविवार को साप्ताहिक छुट्टी दिखाते हैं पर जबरन ड्युटी करवाते हैं – रविवार को साइकिलें फैक्ट्री में पीछे खड़ी करवाते हैं। हैल्परों की तनखा 2800-3000 और कारीगरों की 3200-3500 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम। डेढ सौ मजदूरों में 30-40 की ही ई.एस. आई. व पी.एफ. हैं। पीने का पानी खारा, लैट्रीन गन्दी, मैनेजिंग डायरेक्टर भी गाली देता है।"

भवनीश मैटल वरकर : "30 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2400 और ऑपरेटरों की 2500-3000 रुपये। एक शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से। डेढ सौ मजदूरों में ई.एस.आई. व पी.एफ. मात्र 20 की हैं। **हैवेल्स, इण्डो एशियन, सेबरोस, डेल्फी, प्रणव विकास** का ताम्बे का काम यहाँ होता है।"

वैभव इन्डस्ट्रीज मजदूर : "63 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2000 और ऑपरेटरों की 2800-3000 रुपये।"

युनीक मोल्डिंग श्रमिक : "20 ए इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में महिला मजदूरों की तनखा 2200 रुपये और पुरुषों में हैल्परों की 2500 तथा ऑपरेटरों की 3000-3500 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से। पौने दो सौ मजदूरों में 2-3 की ही ई.एस.आई., पी.एफ.।"

क्लच ऑटो कामगार : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में अप्रैल की तनखा 14 मई को देनी आरम्भ की और स्टाफ को तो आज 20 मई तक नहीं दी है।"

गुडविल वरकर : "276 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में तनखा हर महीने देरी से देते हैं, 20-25 तारीख को। ओवर टाइम के पैसे दो महीने बाद।"

सेक्युरिटी गार्ड : "नीलम पुल के पास कार्यालय वाली **कॉन्टिनेन्टल सेक्युरिटी** गार्डों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3500 रुपये देती है। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

एमरेल्ड इन्टरप्राइजेज श्रमिक : "36 ए इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2200-2500 और कारीगरों की 3000-3200 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। सुबह 9 से रात 8½ की शिफ्ट, रविवार को साँय 5½ तक। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

मुलाटी स्टील कामगार : "292 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 और ऑपरेटरों की 3510 रुपये। ओवर टाइम का भुगतान डेढ की दर से। एक्सीडेन्ट होने पर ई. एस.आई. व पी.एफ. – 125 मजदूरों में 50 की हैं।"

महावीर इन्टरप्राइजेज, कैपिटल रबड़ वरकर: "22 ए इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में महिला मजदूरों की तनखा 1700 रुपये। पुरुषों में हैल्परों की तनखा 2200 और ऑपरेटरों की 3000 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की और साप्ताहिक छुट्टी नहीं। ओवर टाइम सिंगल रेट से। महिला मजदूरों की ड्युटी 8½ घण्टे की। ई.एस.आई. के फार्म सब के भरे हैं पर तनखा से एक-दो के ही 110 रुपये ई.एस.आई. के नाम से काटते हैं। यहाँ **मारुति सुजुकी, जे सी बी** और निर्यात के लिये रबड़ का काम होता है। साहब गाली देते हैं।"

इस समय 8 घण्टे प्रतिदिन कार्य और साप्ताहिक छुट्टी पर अकुशल श्रमिक (हैल्पर) के लिये मासिक निर्धारित न्यूनतम वेतन हरियाणा में 3535 रुपये *(8 घण्टे के 136 रुपये)*, दिल्ली में 3633 रुपये *(8 घण्टे के 140 रुपये)* हैं।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी फरीदाबाद – 121001

कानून : तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगुनी दर से।

दिल्ली से- (पेज चार का शेष)

फैक्ट्री से यह कह कर निकाला कि दिहाड़ी देंगे। दोपहर 2½ बजे जाँच वाले आये तो स्थाई के अलावा जो थोड़े रह गये थे उन्हें बाथरूमों में कर दिया।"

शार्क डिजाइन कामगार : "बी-243 ओखला फेज-1 की बेसमेन्ट में फर्नीचर की फैक्ट्री है। यहाँ कब्र में सुबह 9 से रात 8½ की ड्युटी के बाद, 11½ घण्टे काम करने के बाद के समय को ओवर टाइम कहते हैं। महीने में 10 रोज रात 11 बजे तक और कभी-कभी रात 3½ बजे तक रोकते हैं। महीने में सिर्फ 2 दिन छुट्टी। रोज 11½ घण्टे पर 28 दिन के 4000-5500 रुपये देते हैं। और, जिसे कम्पनी ओवर टाइम कहती है उसके 12 घण्टे को एक दिहाड़ी मानती है। पौने दो सौ मजदूरों में एक की भी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। फैक्ट्री में पीने के पानी की बहुत दिक्कत है – ऊपर चल रही एक्सपोर्ट फैक्ट्री से बोतलों में लाते हैं और वो मना करते हैं। दो लैट्रीन, बहुत गन्दी, लाइन लगती है। हाथ-पैर धोने, नहाने के लिये मात्र एक नल। लकड़ी की चिराई, स्टील चमकाने, पेन्ट करने के कारण चारों तरफ बहुत गन्दगी रहती है। भोजन के लिये स्थान नहीं है, मशीनों की बगल में नीचे बैठ कर रोटी खानी पड़ती है। बेसमेन्ट में घुटन है, कब्र में साँस लेने में दिक्कत होती है।"

गुड़गाँव से -

विभा ग्लोबल मजदूर : "413 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में कल सुबह 9½ बजे काम पर लगे थे और अब सुबह 7 बजे छोड़ा है – ढाई घण्टे बाद वापस काम पर जाना है। सुबह 9½ से रात 8-9 की शिफ्ट है और फिर गेट बन्द कर कई को जबरन सुबह 7 तक रोकते हैं। साप्ताहिक छुट्टी भी नहीं है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 700 मजदूर हैं और कैन्टीन है पर रात को बन्द कर देते हैं। रात को कम्पनी चाय-नाश्ता भी नहीं देती।"

गुलाटी एक्सपोर्ट श्रमिक : " 177 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सैम्पलिंग का काम करते हम 100 मजदूरों की अनेक परेशानियाँ थी। सुबह 9½ काम आरम्भ करते और जबरन रात 2 बजे तक रोक लेते। तनखा 18-20 तारीख को जा कर देते। हम 100 में 20 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. थी। पीने का पानी गन्दा। बीमार बहुत पड़ते और बीमार होने पर नौकरी से निकाल देते। तनखा के समय 100 रुपये रिश्वत। हैल्परों की तनखा 2800 रुपये। बोनस नहीं.... गाली देते थे। इन सब से पार पाने के लिये यूनियन का पंजीकरण करा कर हम 15 मई को मैनेजमेन्ट को पत्र देने गये तो हम सब को फैक्ट्री के बाहर कर दिया। हम श्रम विभाग गये तो वहाँ 22 मई की तारीख के बाद 3 जून की तारीख दे दी है। बात-बात पर पुलिस बुलाने की धमकी। गेट से 300 फुट दूर बैठने को कहते हैं – किसी दूसरी फैक्ट्री के सामने कैसे बैठें ? हम में महिला मजदूर भी हैं और कम्पनी ने पानी रोक दिया है, टॉयलेट पर पाबन्दी लगा दी है। स्टाफ के 40 लोग अन्दर जा रहे हैं और पुलिस रोज आती है। बिना कोई पत्र दिये हम में से 8 को मानेसर जाने की कह रहे हैं।

" गुलाटी एक्सपोर्ट की 203 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हम 200 मजदूरों को कम्पनी ने स्वयं रखा था और 300 को दो ठेकेदारों के जरिये। दो महीने पहले हमारी तनखायें 1500 रुपये कम कर हम 200 को भी ठेकेदारों के जरिये रखे बनाने लगे। इसका विरोध करने पर हम 10 की ई.एस.आई. व पी.एफ. बन्द कर दी और इधर 16 मई को हमें फैक्ट्री से निकाल दिया है। ठेकेदारों के जरिये फिनिशिंग विभाग में रखी 150 महिला मजदूरों को रोज 12 घण्टे काम पर 26 दिन के 2200-2300 रुपये देते हैं। प्रोडक्शन वालों के पीस रेट से 8 घण्टे में 100-125 रुपये ही बनते हैं।"

प्रिमियम मोल्डिंग कामगार : "185 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे 6½ रुपये प्रति घण्टा – स्थाई मजदूरों को 9½ रुपये प्रतिघण्टा। हैल्परों की तनखा 3200 रुपये। बरसों से काम कर रहे 250 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं – अब किसी ठेकेदार के जरिये रखे बना कर ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू करने की कह रहे हैं।"

सेक्युरिटी गार्ड : " हनुमान मन्दिर के पास डुन्डाहेड़ा में कार्यालय वाली **सारथी सेक्युरिटी** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के 4200-4500 रुपये।"

गौरव इन्टरनेशनल मजदूर : "208 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 10 की एक शिफ्ट है – इम्ब्राइड्री विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से है पर चिक-चिक बहुत करते हैं।

" गौरव इन्टरनेशनल की 225 फेज-2 वाली फैक्ट्री से 11 मार्च को 7 पुरुष और 35 महिला मजदूरों को नौकरी से निकाला। हमें तीन बार फैक्ट्री बुलाया पर 11 दिन के पैसे आज 30 मई तक नहीं दिये हैं।

"गौरव इन्टरनेशनल की 236 फेज-1 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को तनखा हर महीने देरी से, अप्रैल की 20-21 मई को दी। जनवरी से देय डी.ए. के 25 रुपये नहीं दिये हैं। ओवर टाइम के पैसे कभी दुगुनी तो कभी सिंगल रेट से। घर जाते समय 10-20 दिन के जो पैसे छूट जाते हैं वे बहुत चक्कर काटने पर भी कम को ही मिलते हैं।"

कोका कोला श्रमिक : "266-7 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हम 64 मजदूर कम्पनी द्वारा रखे 8 ऑपरेटरों के साथ 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में तीसरी मंजिल पर काम करते हैं। हमारी तनखा 2200 रुपये, ओवर टाइम सिंगल रेट से, ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं।"

कोरस होम फिनिशिंग कामगार : "418 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में अप्रैल से रोज सुबह 9½ से रात 2 बजे की एक शिफ्ट है – रविवार को रात 8 बजे तक। ओवर टाइम सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2200 और कारीगरों की 2800 रुपये। गाली देते हैं।"

मुरडियन हाउस वरकर : "231 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2554 और कारीगरों की 3510 रुपये। महीने में 90-100 घण्टे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सिर्फ मास्टरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं – 250 मजदूरों में एक की भी नहीं। मैनेजर गाली देता है।"

चिन्टू क्रियेशन मजदूर : " 295 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से साँय 6 की शिफ्ट है, रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 70-100 घण्टे ओवर टाइम, पैसे सिंगल रेट से। वरकर लगातार काम करते रहते हैं पर कम्पनी कार्ड बदलती रहती है। ई.एस.आई. का कच्चा कार्ड देते हैं पर फण्ड नहीं मिलता। जनवरी से देय डी.ए. के 25 रुपये नहीं दिये हैं।"

अलंकार श्रमिक : " 410 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में 200 घण्टे ओवर टाइम के हो जाते हैं जिनमें से 30-40 घण्टे नुक्स निकाल कर घटा देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। गाली बहुत देते हैं – क्वालिटी कन्ट्रोल मैनेजर सब से ज्यादा।" ☞

के बी एस एच कामगार : " 300 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री की मशीनें हटा कर अब वहाँ कॉल सैन्टर बना दिया है। हम 500 स्थाई मजदूरों की भी नौकरी गई और अब कम्पनी फण्ड के फार्म नहीं भर रही – कहते हैं कि आग लग गई थी, कागज जल गये।" **शापुरजी पलोनजी वरकर** : " 243 उद्योग विहार फेज-1 स्थित कम्पनी ने फरवरी में शटरिंग लाइन के हम 40 मजदूरों को निकाल दिया पर हमारी 4 महीनों की तनखायें नहीं दी – काम करते समय हमें 300 रुपये प्रति सप्ताह खर्चा ही देते थे। हम ने श्रम विभाग में शिकायत की है।" **जी एल कम्पलैक्स,** 575 फेज-1, हैल्परों की तनखा 2400 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं; **मेजेन्टा,** 26 फेज-4, ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2600 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं; **राधनिक,** 215 फेज-1, महीने में 60-65 घण्टे ओवर टाइम, हस्ताक्षर दुगुनी दर पर लेकिन देते सिंगल रेट से हैं, जनवरी से देय डी.ए.के 25 रुपये नहीं दिये हैं; **कृष्णा लेबल,** 162 फेज-1, 9½ घण्टे ड्युटी पर हैल्परों को 3510 रुपये; **लोगवैल फोर्ज,** 116 फेज-1, दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से; ......

कुछ पते

25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिए

1. श्रम मन्त्री, भारत सरकार
श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग नई दिल्ली –110001
2. केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त
14 भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली–110066
3. क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त, भविष्य निधि भवन, सैक्टर-15ए, फरीदबाद–121007
4. उप-क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त
प्लॉट 43, सैक्टर-44, गुड़गाँव – 122002
5. क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त (दक्षिणी दिल्ली)
60 स्काईलार्क बिल्डिंग, पाँचवीं मंजिल
नेहरु प्लेस, नई दिल्ली – 110019
6. क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त (उत्तरी दिल्ली)
28 वजीरपुर इन्डस्ट्रीयल एरिया
नई दिल्ली–110052
7. महानिदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
कोटला रोड, नई दिल्ली-110002
8. क्षेत्रीय निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन, सैक्टर-16, फरीदाबाद– 121002 (पूरे हरियाणा के लिये)
9. क्षेत्रीय निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, डी.डी.ए. एस.सी. ओ., राजेन्द्रा प्लेस, नई दिल्ली-110008 (दिल्ली क्षेत्र के लिये)
10. श्रीमान उप श्रम आयुक्त
पुराना ए डी सी दफ्तर, सैक्टर-15ए
फरीदाबाद – 121007
11. श्रीमान श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार
30 वेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ
12. श्रीमान श्रम मन्त्री,
हरियाणा सचिवालय चण्डीगढ
13. श्रीमान मुख्य मन्त्री,
हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ
14. श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार
5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली–110054
15. उप श्रमायुक्त (दक्षिण दिल्ली)
122-123 ए-विंग पहली मंजिल,
पुष्प भवन, पुष्प विहार, नई दिल्ली।

युवा मजदूर

एक्शन कन्स्ट्रक्शन इक्विपमेन्ट (ए सी ई) श्रमिक : "दुधौला गाँव में कम्पनी की नई फैक्ट्री से 150 ट्रैक्टर मण्डी में भेजे जा चुके हैं। रोज 12½ घण्टे की शिफ्ट में हम 70 मजदूर 5-6 ट्रैक्टर बनाते हैं। एक ने बीमार होने और दो ने शादी में जाने के लिये 28 अप्रैल की छुट्टी ली तो 29 अप्रैल से उन्हें ड्युटी पर नहीं लिया। इस पर 5 मई को हम सब फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये। उत्पादन बन्द है और आज 7 मई को भी हम बाहर बैठे।

"ए सी ई कम्पनी ने स्वयं हमें भर्ती किया। एक महीना पूरा होने पर ए सी ई की वर्दी दी। गेट पास भी 25 अप्रैल तक ए सी ई के नाम से दिये। फिर अचानक कम्पनी हमें ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर कहने लगी। हमारे द्वारा काम बन्द करने के दूसरे दिन, 6 मई को **पैन्थर सेक्युरिटी** का एक बन्दा फैक्ट्री आया। बहुत आश्वासन दिये और अन्दर चलने को कहा तो हम ने निकाले हुये 3 को पहले लेने को कहा। अन्दर जा कर वह बाहर आया और बोला कि जो करना है करो, 3 को अन्दर नहीं लेंगे।

"दुधौला में ए सी ई फैक्ट्री में हमारे सम्मुख समस्या पर समस्या हैं। सुबह 9 से रात 9½ तक रोज जबरन रोकते हैं, रविवार को 8 घण्टे काम। रोज के ओवर टाइम के मात्र 60 रुपये और रविवार के 120 रुपये। किसी दिन 2-3 घण्टे ही ज्यादा रोका तो उसके कोई पैसे नहीं। फैक्ट्री मथुरा रोड़ से काफी दूर है और वरकर फरीदाबाद व पलवल से हैं। रात 9½ छूटने पर सुनसान क्षेत्र से पैदल मथुरा रोड़ पहुँचते हैं। हाथ देने पर जो ट्रक रुक जाते हैं उन से लौटते हैं। रात 1 बजे घर पहुँचते हैं। पुलिस से परेशानी।

"ए सी ई ट्रैक्टर का सब काम फैक्ट्री में ही होता है, बस इन्जन चीन से आते हैं जिन पर नाम मिटा कर कम्पनी अपना छाप देती है। ट्राली पर रख कर सरकाते हुये उस पर काम होता है। सब जगह सब काम हाथों से – मात्र दो प्रेशर गन हैं। तनखा 3510-4000 रुपये। मात्र 3 पँखे हैं और धूप में भी काम करना पड़ता है। पीने का पानी गर्म। चोट लगने पर प्राथमिक उपचार भी गाँव जा कर मजदूर अपने पैसों से करवायें। स्टाफ के 60-70 लोग हर समय हमारे सिर पर खड़े रहते हैं – उनका काम बस गाली देने का है।

"5 मई को हम फैक्ट्री में नहीं गये तो टाइम ऑफिस वाले के बाद सी ई ओ जी. के. अग्रवाल आया और 3 को हफ्ता-दस दिन में लेने की कही। इस पर हमारे अन्दर नहीं जाने पर फिर परसनल हैड धमकाने आया : दारू पी कर ड्युटी करते हो, चोरी करते हो, आज से सब का गेट बन्द, लोकल हो कर दादागिरी करते हो, दो हजार में बाहर के रख लेंगे, पुलिस से मरोड़ निकलवा देंगे।

"हम दुधौला गाँव के लोगों से मिले। ए सी ई के बैक हो, सी एन सी, वैल्डिंग शॉप मजदूरों से मिले। दुधौला में हाई पोलीमर लैब व अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों से बातें की। आज 7 मई को हम फैक्ट्री गये तो वहाँ पुलिस थी। हमें गेट पर नहीं बैठने दिया, फैक्ट्री की तरफ वाली जगह पर भी नहीं बैठने दिया – कम्पनी की बदनामी होती है! हम एक खाली प्लॉट में बैठे तो वहाँ मैनेजमेन्ट के लोग धतीर थाने के ए एस आई को ले कर पहुँचे और बोले : पैसे वालों से नहीं लड़ सकते, समझौता कर लो, पकड़ कर अन्दर कर देंगे, तारीख भुगतते रहोगे.... हम में से एक ने तारीख भुगत लेंगे कहा तो ए एस आई उसे ले कर चलने लगा। हम सब साथ चले तो उसे छोड़ कर पुलिस वाला यह कह कर चला गया कि झगड़ा मत करना। स्टाफ के लोग आ-आ कर देख जाते हैं। एक अखबार वाला फोटो ले गया है। सी आई डी वाला रिपोर्ट ले गया है।"

इल्पिया पैरामाउन्ट कामगार : "सैक्टर-59 पार्ट-बी झाड़सेंतली-जाजरू रोड़ स्थित फैक्ट्री में बरसों से काम कर रहे 80 कैजुअल वरकरों की तनखा 2500-3000 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और एक दिन छोड़ कर 36 घण्टे लगातार ड्युटी..... श्रम विभाग, श्रम मन्त्री, मुख्य मन्त्री को शिकायतें की।

"27 फरवरी को साँय 4 बजे श्रम विभाग की गाड़ी फैक्ट्री में आई। अधिकारी कार्यालय में गये और परसनल विभाग वाले कैजुअलों को बाहर निकालने लगे पर कई ने फैक्ट्री से निकलने से इनकार कर दिया। श्रम अधिकारी ने नाम लिखे, बातें सुनी और तनखा अपने सामने दिलवाने की कही।

"7 मार्च को श्रम अधिकारी इल्पिया पैरामाउण्ट फैक्ट्री आया तो कम्पनी ने पैसे की दिक्कत बता कर तनखा अगले दिन देने की कही। मैनेजमेन्ट ने 8 मार्च को 40 स्थाई मजदूरों को दिन की शिफ्ट में बुलाया और 80 कैजुअलों को रात की शिफ्ट में आने को कहा। श्रम अधिकारी ने 8 मार्च को अपने सामने जिन्हें तनखा दिलवाई वे स्थाई मजदूर थे..... पर कैजुअल वरकर फैक्ट्री गेट पर एकत्र हो गये थे। यह देख कर परसनल मैनेजर बोला कि कल आना, यह पैसे लो और जाओ चाय पीओ-समोसे खाओ, एक घण्टे बाद आना। मजदूर टले नहीं और श्रम अधिकारी फैक्ट्री से निकला तो घेर लिया। अगले दिन तनखा का आश्वासन। श्रम अधिकारी 9 मार्च को फैक्ट्री पहुँचा तो कम्पनी ने पैसे की दिक्कत बताई और फिर यही बात 10 मार्च को दोहराई तो श्रम अधिकारी ने धमकी दी। अन्ततः 11 मार्च साँय 5 बजे श्रम अधिकारी के सामने 80 कैजुअलों को 3510 रुपये तनखा दी और पे-स्लिप भी दी पर उसमें ई.एस.आई. व पी.एफ. नम्बर नहीं हैं। फरवरी माह के 200-300 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से 25 मार्च को अपने सामने दिलवाने की कह कर श्रम अधिकारी गया पर 25 को फैक्ट्री नहीं आया और 29 मार्च को कम्पनी ने 2500-3000 रुपये तनखा अनुसार ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से दिये।

"और फिर **इल्पिया पैरामाउण्ट** मैनेजमेन्ट ने कैजुअल वरकरों से हस्ताक्षर 3540 पर करवाये पर मार्च तथा अप्रैल की तनखायें 2500-3000 रुपये दीं। एतराज पर मजदूर निकालने शुरू किये और चुन-चुन कर नई भर्ती आरम्भ की। रात 8½ बजे छूटने पर 15 अप्रैल को कुछ नये लोगो से मथुरा रोड़ पर किन्हीं का झगड़ा हुआ तब से कम्पनी ने उन्हें लाने-ले जाने के लिये वाहन का प्रबन्ध किया है। इस मामले में मैनेजमेन्ट ने कुछ स्थाई मजदूरों को पुलिस से गिरफ्तार करवा कर फैक्ट्री से बाहर भी किया हुआ है। इधर 12 मई को दो गाड़ियों में 10-12 लोग फैक्ट्री में आये। मैनेजर के कार्यालय में बैठ कर उन्होंने एक-एक कर कैजुअलों को बुला कर धमकाया – कम्पनी के कहे अनुसार चलो नहीं तो हाथ-पैर तोड़ देंगे।"

दिल्ली से -

बसन्त इण्डिया मजदूर : "जी-4 बी-1 एक्सटैन्शन मोहन कोऑपरेटिव इन्डस्ट्रीयल एस्टेट स्थित फैक्ट्री में काम करते 170 मजदूरों में किसी की भी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। मैनेजिंग डायरेक्टर और मैनेज़र गाली देते हैं, मारपीट करते हैं। हैल्परों की तनखा 2400-3500 रुपये। वेतन हर महीने देरी से – अप्रैल की तनखा आज 19 मई तक नहीं दी है।"

आर जी सी इन्डस्ट्रीज श्रमिक : "सी-63/4 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में ई.एस.आई. व पी.एफ. 30 स्टाफ और 70 स्थाई मजदूरों के ही हैं। ठेकेदार के जरिये रखे 350 वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, सिलाई कारीगर पीस रेट पर और बाकी सब मजदूरों को 8 घण्टे के 80 रुपये। कम्पनी द्वारा स्वयं रखे जाते 6 महीने में ब्रेक वाले 65-70 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और तनखा 2800 रुपये।

"आर जी सी फैक्ट्री में **जेस्को, टोनाला, इन्जुआ, फ्लोट्स, निमुखी** के लिये परिधान बनते हैं। कम्पनी वालों का मई-जुलाई में ओवर टाइम कम हो जाता है पर ठेकेदार के जरिये रखों का पूरे वर्ष 150-200 घण्टे प्रतिमाह ओवर टाइम। सुबह 9½ से रात 2 तक काम – महिला मजदूरों को भी रात 2 बजे छोड़ते हैं। कोई महिला रात 2 बजे तक रुकने से इनकार करती है तो उसे नौकरी से निकाल देते हैं। स्थाई मजदूरों को ही गेट पास देते हैं – बाकी सब को एक फोन नम्बर। रात 2 बजे लौटने का प्रबन्ध महिला मजदूर भी स्वयं करें। **(बाकी पेज दो पर)**

"आर जी सी का मैनेजिंग डायरेक्टर रमणीक सिंह उप्पल रोज सुबह 8½ फैक्ट्री आता है और रात 8 बजे जाता है। स्टाफ के 30 लोगों के लिये कैन्टीन है पर 500 मजदूरों के लिये भोजन करने का स्थान भी नहीं है। ठेकेदार गाली देता है। जुलाई 07 में एक दिन स्थाई मजदूरों को छोड़ कर बाकी सब वरकरों को भोजन अवकाश से पहले

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011